(4) तत्कालीन संगीत का विस्तार करने के लिए षडजग्राम और मध्यमग्राम इन दो
करना आवश्यक था, इसीलिए सात स्वरों के आधार पर षडजग्राम की 7 'मूर्च्छना' और
7 'मूर्च्छना'। इस प्रकार 'मूर्च्छनाओं की संख्या 14 मानी गई।

(5) 'मूर्च्छना' के चार प्रकार बताए गए हैं—

(i) सम्पूर्ण मूर्च्छना, जिसे परवर्ती विद्वानों ने 'शुद्ध' 'मूर्च्छना' कहा है।

(ii) षाडव 'मूर्च्छना'

(iii) औडव 'मूर्च्छना'

(iv) साधारणीकृत मूर्च्छना

षाडव और औडव 'मूर्च्छना' 'तान'' कहलाई। परवर्ती विद्वानों ने 'मूर्च्छना' के चार
बताए—

(1) शुद्धा या सम्पूर्ण 'मूर्च्छना', (2) अन्तर गन्धार संहिता, अर्थात् जिस 'मूर्च्छना'
का प्रयोग किया जाय वह अन्तर गन्धार 'मूर्च्छना' है। (3) जिस 'मूर्च्छना' में काकली नि
किया जाय वह काकली निषाद युक्त 'मूर्च्छना' थी। (4) जिस 'मूर्च्छना' में अन्तर गन्धार
निषाद, दोनों का प्रयोग किया जाए वह अन्तर काकली संहिता या साधरणीकृत 'मूर्च्छना
मूर्च्छना की सर्वाधिक विशेषता थी, ग्राम के प्रत्येक स्वर को आरम्भिक स्वर मानते हुए नवी
को प्राप्त करना था। इससे विकृत स्वरों के अनेक स्वर-समूह प्राप्त हो जाते थे। अलग से वि
कल्पना नहीं करनी पड़ती थी। पाश्चात्य संगीत में इसी को shift of key note या षडज
जाता है।